स्वतंत्रता
संग्राम के
महानायक
असहयोग व
स्वदेशी के
प्रथम प्रणेता
समाज-सुधारक
गो-रक्षक
एवं सनातन
धर्म परंपरा
के रहनुमा

श्री सद्गुरू राम सिंह जी

(गुरू) राम सिंह सिख दार्शनिक, सुधारक अंग्रेजी व्यापार तथा नौकरियों के प्रति असहयोग व बहिष्कार को राजनीतिक शस्त्र के रूप में प्रयोग करने वाला प्रथम् भारतीय है।

(इनसाइक्लोपीडिया ब्रिटेनिका)

Namdhari Elibrary NamdhariElibrary@gmail.com

१५ दिसम्बर, १९९६ ई. को श्री सद्गुरू जगजीत सिंह जी के सान्निध्य में 'सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय, वाराणसी में श्री सद्गुरू राम सिंह जी महाराज पीठ की स्थापना

प्रवचन श्री सद्गुरू जगजीत सिंह जी

सद्गुरू राम सिंह जी अपने रहितनामें (पत्र) में लिखा है, ''मन्दा, फिका नहीं बोलना, क्षमा करना, बोल-कबोल सबका सहन करना। जो कोई कुछ मारे ता भी क्षमा करनी।'' एक अन्य हुक्मनामें में लिखा है, ''क्षमा धीरज रखनी, क्षमा धीरज वालों के गुरू अंग-संग है। एक तरफ हमारी ताकत है और दूसरी तरफ अगर क्षमा धैर्य धारण करें तो गुरू की ताकत है। गुरू की ताकत के लिए गुरूवाणी में लिखा है :

जामि गुरू होइ वलि धनहि किआ गारव दिजए।।
जामि गुरू होइ वलि लख बाहे किआ किजए।।

नामधारी नवयुवकों को मैं विनती करू, जितना मर्जी पढ़ो, कोई हर्ज नहीं परन्तु ऐसी पढ़ाई यहां से आपको लगे हमारे पैर फिसल रहे है वहाँ पर पैर रखने से संकोच करो। सिनेमा मत देखा करो, नावल मत पढ़ा करो, अगर पढ़ना है तो गुरवाणी, साधुओं की कथा पढ़ा करो, रामायण पढ़ा करो, अपने धर्म ग्रन्थ पढ़ा करो।

श्री सद्गुरू राम सिंह जी महाराज पीठ

संपूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय, वाराणसी

एवं

नामधारी दरबार, श्री भैणी साहिब द्वारा

संगोष्ठी

'भारतीय संस्कृति, सद्भावना एवं सिक्ख धर्म' विषय पर श्री सद्गुरू उदय सिंह जी की पावन उपस्थिति में आयोजित की जा रही है। जिसमें आप सादर आमन्त्रित हैं।

मुख्य अतिथि : श्री केशव प्रसाद मौर्या, उपमुख्यमंत्री (उ.प्र.)

अध्यक्ष : प्रो. राजाराम शुक्ल, कुलपति सं.सं.वि.वि., वाराणसी

दिनांक : 9 दिसम्बर, 2018, रविवार
समय : सुबह 10:30 से 2:00 बजे तक
स्थान : पाणिनी भवन सभागार, सं.सं.वि.वि., वाराणसी

विशिष्ट अतिथि :

प्रो. टी.पी. सिंह कुलपति, महा. गां. काशी विद्यापीठ, वाराणसी

प्रो. हरमहिन्दर सिंह बेदी चांसलर, सैन्ट्रल युनिवर्सिटी, हि.प्र.

म.म. स्वामी श्री प्रणव चैतन्यपुरी अध्यक्ष, परमार्थ साधक संघ, वाराणसी

प्रो. विश्वम्भरनाथ मिश्र अध्यक्ष, संकटमोचन फाउंडेशन, वाराणसी

निवेदक :

डा. रेणु द्विवेदी
निर्देशिका : श्री सद्गुरू राम सिंह जी पीठ

स. मनजीत सिंह
सदस्य, श्री सद्गुरू राम सिंह जी पीठ

यादविन्दर सिंह
नामधारी दरबार, श्री भैणी साहिब

Namdhari Elibrary NamdhariElibrary@gmail.com

स्वतंत्रता संग्राम के सूत्रधार

श्री सतगुरू राम सिंह जी

१९वीं सदी के भारतवर्ष पर छाई गुलामी की अंधकारमयी रात में सतगुरू राम सिंह जी सूर्य समान प्रकट हुए। आपका अवतार १८१६ ई. बसंत पंचमी को गाँव राईयां जिला लुधियाना (पंजाब) में हुआ। युवा अवस्था में आप स्वतंत्र खालसा राज, पंजाब की फौज में भी रहे। २९ मार्च १८४९ को भारत का अंतिम स्वतंत्र राज्य, पंजाब भी ब्रिटिश साम्राज्य के पराधीन हो गया।

१२ अप्रैल १८५७ ई. को सतगुरू राम सिंह जी ने श्री भैणी साहिब, पंजाब में श्वेत तिकोना ध्वज फहरा कर स्वतंत्रता संग्राम का बिगुल बजाया। आपने बहुआयामी संग्राम को प्रारंभ किया। आप विश्व के पहले नीति-वेत्ता हैं, जिन्होंने अपने देश को आजाद करवाने के लिए विदेशी सरकार के साथ पूर्ण असहयोग एवं उनके व्यापार व नौकरियों के प्रति बहिष्कार को राजनीतिक शस्त्र के रूप में प्रयोग किया। स्वदेशी का प्रचार-प्रसार किया। लाखों लोग सतगुरू राम सिंह जी के ध्वज तले एकत्रित हो गए। विदेशी सरकार की ओर से भारतीयों की भावनाओं के विरुद्ध गोहत्या हेतु बूचड़खाने खोले गए।

सन् १८७१-७२ ई. में नामधारी सिक्खों ने गो हत्या के खिलाफ विदेशी साम्राज्य के विरुद्ध विद्रोह कर दिया। अमृतसर, रायकोट, लुधियाना में नामधारी सिक्खों को सरेआम फाँसी के फंदों पर लटका कर शहीद कर दिया गया। १७-१८ जनवरी १८७२ ई. को मलेरकोटला में ६६ नामधारी सिक्खों को तोपों के सन्मुख खड़े कर उड़ा दिया गया। १७-१८ जनवरी १८७२ की मध्य रात्रि के समय सतगुरू राम सिंह जी को श्री भैणी साहिब से लुधियाना एवं लुधियाना से विशेष रेल द्वारा इलाहाबाद भेज दिया गया। १९ जनवरी १८७२ को श्री सतगुरू राम सिंह जी को सेवक नानू सिंह एवं प्रमुख सूबाओं सहित इलाहाबाद किले में नजरबंद कर दिया गया। श्री भैणी साहिब में पुलिस चौकी स्थापित की गई, जो ५१ वर्ष तक कायम रही।

सतगुरू राम सिंह जी को सेवक नानू सिंह सहित १० मार्च १८७२ को इलाहाबाद से रेल द्वारा कलकत्ता एवं समुद्री जहाज द्वारा रंगून (बर्मा) निर्वासित किया गया। आपके शिष्य १० प्रमुख सूबाजनों को प्रयागराज किले से देश के दूरदराज किलों में कैद कर दिया गया। सतगुरू राम सिंह जी के देश-निर्वासन के पश्चात् सतगुरू हरी सिंह जी और सतगुरू प्रताप सिंह जी ने आज़ादी संग्राम का नेतृत्व किया। अनेक देश-भक्तों ने सतगुरू राम सिंह जी द्वारा चलाए स्वतंत्रता संग्राम का अनुसरण किया व अंततः परिणाम स्वरूप भारत देश आज़ाद हुआ। स्वतंत्र भारत में सतगुरू जगजीत सिंह जी की सुयोग्य छत्र-छाया में देश के बहुआयामी विकास हेतु नामधारी समुदाय ने अहम् भूमिका निभाई। वर्तमान गद्दी नशीन सतगुरू उदय सिंह जी के सुयोग्य नेतृत्व में नामधारी सिक्ख, आदर्श समाज के सृजन हेतु सदैव प्रयत्नशील हैं।

Namdhari Elibrary NamdhariElibrary@gmail.com